गाँधी के पर्यावरणीय चिन्तन की दार्शनिक विवेचना

–डॉ0 सरिता रानी
असिस्टेंट प्रोफेसर
महिला महाविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रस्तावना

पर्यावरण पृथ्वी पर उपस्थित सभी जैविक एवं अजैविक तत्वों का योग है। जल, वायु, भूमि, पेड़–पौधें एवं जीव जन्तु सभी मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते है। इनमें से किसी एक घटक की अनदेखी करने से गम्भीर पर्यावरणीय संकट उपस्थित होता है। जो पर्यावरण प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, जल संकट के रूप में मानव के समक्ष चुनौती प्रस्तुत करता है।

प्राचीन काल से ही भारतीय चिन्तन में पर्यावरण को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। वेद, पुराण तथा अनेक वैदिक साहित्य पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए मानव को सन्देश देते है। महात्मा गाँधी वो महापुरूष थे जिन्होंने वेदों, उपनिषदों में कही गयी बातों को ही अपने जीवन में अपनाया। वर्तमान में उपस्थित पर्यावरणीय संकट को महात्मा गाँधी ने कई वर्षों पहले ही समझ लिया था फलतः उन्होंने अपने विचारों द्वारा मानव को एक संयमित जीवन जीने की शिक्षा दी। गाँधी मात्र एक व्यक्ति नहीं है वरन एक विचारधारा है जो आज भी अपने दर्शन द्वारा विश्व का पथ आलोकित कर रही है। गांधी अपने राजनैतिक दर्शन, सामाजिक दर्शन व धार्मिक दर्शन के कारण सम्पूर्ण विश्व में जाने जाते हैं किन्तु उनका पर्यावरणीय चिन्तन में भी उनके योगदान को कम नहीं कहा जा सकता है जिसका प्रमाण यह है कि वर्तमान परिस्थिति में अत्यन्त प्रासंगिक दिखता है।प्रस्तुत शोध पत्र में वर्तमान में उपस्थित पर्यावरणीय संकट जैसे बढ़ती जनसंख्या पर्यावरण प्रदूषण, असंयमित जीवन शैली, वनो का काटना इत्यादि विषयों के समाधान के रूप में महात्मा गाँधी द्वारा दिया गया पर्यावरण दर्शन को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जायेगा।

गांधी जी का पर्यावरण दर्शन नैतिक नियमों पर आधारित था। गांधी जी की कथनी व करनी में कोई अन्तर नहीं था इसीलिए उन्होंने कभी भी ऐसा कोई उपदेश नहीं दिया जिसका की अपने जीवन में स्वयं पालन नहीं करते हो। प्रकृति चिन्तन है।

पर्यावरण संरक्षण को लेकर चलने वाले अनेकों आन्दोलन महात्मा गांधी के पर्यावरणीय दर्शन से प्रेरित है जिनमें चिपको आन्दोलन, नर्मदा बचाओं आन्दोलन आदि प्रमुख है। महात्मा गांधी का सम्पूर्ण दर्शन सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह व ब्रह्मचर्य पर आधारित था। यही कारण था कि गांधी जी ने हमेशा प्राकृतिक संसाधनों के महत्व और इसके संरक्षण पर जोर दिया था।गांधी जी कोई पर्यावरणीवद् नहीं थे और न ही उन्होंने उसकी शिक्षा ग्रहण की थी किन्तु वे प्राचीन काल से चली आ रही सनातन परम्परा के पोषक थे जहाँ पर्यावरण को सर्वोपरि माना गया है। महात्मा गांधी प्रकृति संरक्षण के लिए एक ऐसी जीवन पद्धति के हिमायती थे जिससे नैसर्गिक रूप से पर्यावरण संरक्षण हो सके। सत्य, अहिंसा, स्वच्छता, खादी, सर्वोदय आदि उनके विचारों की आधारशिला थे जो आज भी विश्व में प्रसिद्ध है।

गांधी जी ने वातावरण की स्वच्छता पर भी बल दिया। अनावश्यक कचरा फेंकना, नदियों व जलाशय को गन्दा करना उन्होंने पाप माना। अपने आश्रम में महात्मा गांधी स्वयं ही झाड़ू लगाया करते थे। महात्मा गांधी का सम्पूर्ण जीवन ही पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा देता है। उन्होंने मानव की प्राकृतिक नियमों के पालन का संदेश दिया। प्रकृति से मानव की दूरी का उन्होंने सदा विरोध किया। यही कारण था कि शारीरिक रोगों से मुक्ति के लिए भी इसीलिए उन्होंने प्राकृतिक उपचार (आयुर्वेद)

पर बल दिया।

गांधी जी अहिंसा मार्ग के अनुयायी थे पर्यावरण विरोधी कार्यो को भी हिंसा माना तथा उसका विरोध किया। मानव का हित प्राकृतिक नियमों के अनुपालन में है प्रकृति को अपने अधिपत्य में रखकर अपने लालच की पूर्ति के लिए इस्तेमाल करना मानव के भविष्य को अंधकार में धकेलने के समान है। गांधी जी कहते है कि ''जब तक मानव संस्कृति के भौतिक नियमों के केन्द्र में अहिंसा नहीं होगी, हम प्रकृति के विरूद्ध हिंसा रोकने के लिए, पर्यावरण सम्बन्धी गतिविधियाँ नहीं चला सकते।''

गांधी जी विज्ञान और आधुनिकीकरण के विरोधी नहीं थे किन्तु ऐसी आधुनिकता के वो पक्षधर नहीं थे जो प्रकृति विरोधी है। वो ऐसी आधुनिकता के पक्षधर थे जो प्रकृति संगत रहे।[1] गांधी जी का कथन है कि– ''प्रकृति मानव की प्रत्येक आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम है किन्तु मनुष्य के लोभ को पूरा करने की क्षमता इसमें नहीं है।''2 यही कारण था कि महात्मा गांधी अस्तेय व अपरिग्रह पर भी बल देते है जो मानव को संयमित रखते है।[3] एक असंयमित व्यक्ति ही सुविधाभोगी बनकर प्रकृति का दोहन करता है जिससे पर्यावरण संतुलन भंग होता है।

गांधी जी का सम्पूर्ण जीवन सादगी व संयमित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। गांधी जी का सर्वोदय दर्शन व ग्रामस्वराज सर्वजन हिताय व सर्वजन सुखाय के मूलमंत्र पर आधारित था।[4] गांधी जी भारतीय जीवन पद्धति से भली–भाँति अवगत थे वो जानते थे कि गाँवों से ही पर्यावरण को संतुलित रखा जा सकता है फलतः वो कृषि पर विशेष बल देते थे।

गांधी जी का पर्यावरण के प्रति प्रेम उनके दर्शन में स्पष्ट दिखता है। स्वदेशी, शरीर श्रम, कृषि गौर संरक्षण आदि पर बल देकर गांधी जी ने मानव को पर्यावरण से जोड़ने का प्रयास किया तथा पर्यावरण से जुड़ी अनेक समस्याओं को दूर करने का मार्ग भी प्रशस्त किया। उनका कहना था कि सेवा कि जड़ प्रेम या अहिंसा में न हो तब तक सेवा सम्भव नहीं है। सच्चा प्रेम समुद्र की तरह निस्सिम होता है।[5] अपनी पुस्तक द हिंद स्वराज में गांधी जी ने निरन्तर आधुनिकीकरण के कारण उत्पन्न हो रही समस्याओं से मनुष्य को आगाह किया।[6] उन्होंने मानव लोभ के कारण हो रहे प्राकृतिक दोहन के प्रति लोगों को सचेत भी किया। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक संतुलन बनाये रखने के लिये मानव को अपनी इच्छाओं पर नियन्त्रण रखना होगा तथा उसे संयमित बनना होगा। मानव को अपने अधिकारों के साथ–साथ अपनी जिम्मेदारियों को भी निभाना पड़ेगा तभी प्रकृति के साथ उसका रिश्ता मजबूत होगा। अन्यथा आधुनिकीकरण तथा आद्योगीकरण में ही उसके विनाश के बीज निहित है।[7]

गांधी जी औद्योगिकरण के खिलाफ थे उनका मानना था कि इससे निकलने वाला धुँआ व गन्दा पानी पर्यावरण को खराब कर सकता है। उनका मानना था कि शुद्ध हवा औद्योगिकरण से प्रभावित होती है।महात्मा गांधी ने दूषित वायु से होने वाले खतरे का अनुमान बहुत पहले ही कर लिया था। अपने एक लेख ''की टु हेल्थ'' (स्वास्थ्य कुंजी) में उन्होंने शुद्ध वायु की आवश्यकता पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने अपने लेख में बताया कि मानव शरीर के समुचित विकास के लिए जल, वायु व भोजन तीनों की आवश्यकता होती है किन्तु शुद्ध हवा और पानी पर समस्त मानव का अधिकार है अतः उसे स्वच्छ रखना प्रत्येक व्यक्ति की नैतिक जिम्मेदारी है।

वे कहते है कि जीवन की आवश्यकताओं को पाने का हर एक आदमी को समान अधिकार है। यह अधिकार तो पशु पक्षियों को भी है।[8] 100 साल पहले ही महात्मा गांधी पर्यावरण में बढ़ते प्रदूषण को लेकर चिंतित थे तथा इसको दूर करने के लिए उन्होंने अनेक उपायों की भी व्याख्या की। उन्होंने बढ़ते भौतिकीकरण के विषय में कहा है कि भौतिक सुख और आराम के साधनों के निर्माण और उनकी निरंतर खोज में लगे रहना ही अपने आप में एक बुराई है। उन्होंने यूरोप के लोगों को अंधाधुंध भौतिकीकरण के प्रति आगाह करते हुये कहा कि समस्त लोगों को अपने दृष्टिकोण पर पुर्नर्विचार करना होगा। गांधी जी ने पश्चिमीकरण का अनुकरण करने पर उन्होंने विरोध किया उन्होंने कहा कि यदि

भारत ने पश्चिमी माडल का पालन किया तो उसे अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए एक अलग धरती की जरूरत होगी।

महात्मा गांधी स्थानीय वस्तुओं के उपयोग पर बल देते थे। उनका कहना था कि मनुष्य जब अपनी भौतिक जरूरतों को पूरा करने के लिए दूर के संसाधनों का प्रयोग करेगा ऐसे में अनावश्यक रूप से अत्यधिक उर्जा का उपयोग किया जाता है जिसकी वजह से वातावरण में कार्बन डाई आक्साइड व ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन होता है इसीलिए उन्होंने स्थानीय फल, फूल, सब्जियों व खाद्य पदार्थों को अपनाने पर जोर दिया।[9]

महात्मा गांधी मानव जीवन में शारीरिक श्रम को अत्यन्त महत्वपूर्ण मानते है। उनका कहना था कि बिना श्रम के किसी व्यक्ति को रोटी खाने का अधिकार नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को मेहनत करनी चाहिए तभी वह श्रम के महत्व को समझ पायेगा।[10] वे कहते है कि महान प्रकृति की इच्छा तो यही है कि हम अपनी रोटी पसीना बहाकर कमायें।[11]

वर्तमान बढ़ती मोटर वाहनों ने वायु में जहर घोल दिया है। प्रत्येक मानव अपने वाहन का प्रयोग दूरी तय करने के लिये कर रहा है जिसका परिणाम बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग है जो चिंता का विषय है। महात्मा गांधी ने अनेक वर्ष पूर्व ही कारों के प्रयोग को अनुचित ठहराया उनका कहना था कि यदि प्रत्येक भारतीय परिवार में एक कार होगी तो सड़कों पर चलने के लिए जगह की कमी पड़ जायेगी। उनका कहना था कि जहाँ तक व्यक्ति चल सकता है तो वहा तक कारों के प्रयोग से बचना चाहिए। आज अनेक महानगर ऐसे है जहाँ बढ़ते वायु प्रदूषण ने मानव का सांस लेना दूभर कर दिया है जिसका परिणाम है कि वाहनों को आड और ईवन नम्बर से चलाने के आधार पर प्रदूषण को कम करने का प्रयास किये जा रहे है। ईधन की जगह कार की इलेक्ट्रिक वाहनों को चलाने के प्रयास किये जा रहे है।

गांधी जी ने वायु प्रदूषण के साथ–साथ जल के संरक्षण के लिए भी आवाज उठाई, उन्होंने वर्षा के जल को एकत्रित करके उससे फसलों की सिंचाई के उपयोग में लाने के लिए लोगों को प्रेरित किया। यही कारण था कि उन्होंने तालाबों व कुँओं को बनवाने पर बल दिया जिससे पानी का संरक्षण हो सकें।उन्होंने बेकार पड़ी खाली भूमि पर वृक्ष लगाने के लिए लोगों को प्रेरित किया। जिससे बारिश के जल को बहने से रोका जा सके। उन्होंने लोगों को वृक्षारोपण के महत्व को समझाया। दिल्ली की एक सभा को 1947 में सम्बोधित करते हुये उन्होंने वर्षा के पानी को प्रयोग करने के लिए कहा।

गांधी जी धार्मिक क्रिया कलापों के दौरान नदी व घाटों की गन्दगी की निन्दा करते है। कि जिन नदियों को हम पवित्र होने के लिए नहाते है उनके पानी को बिगाडने या गन्दा करने में हमको कोई हिचक नहीं होती है। इसको गांधी जी एक दुर्गुण स्वीकार करते है।12 इस दुर्गुण का दुष्परिणाम यह है कि हमारी पवित्र नदियों के पवित्र तटों की लज्जजनक दुर्दशा और गन्दगी से पैदा होने वाली बीमारियाँ हमें भोगनी पड़ती है।वर्तमान में भी भारत की लगभग प्रत्येक नदी का जल प्रदूषित हो चुका है। बड़ी–बड़ी परियोजनाएँ भी मिलकर नदियों को स्वच्छ नहीं कर पा रहे है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि गांधी एक दूरदर्शी थे जिन्होंने भविष्य में होने वाले पर्यावरण सम्बन्धी चुनौतियों को बहुत पहले ही समझ लिया था तथा लोगों को उन चुनौतियों से लड़ने के लिए आगाह भी किया। उन्होंने प्रकृति व मनुष्य के बीच उन्नति स्थापित करने पर बल दिया तथा मानव की उपभोगवादी नीति का विरोध कर सरल जीवन जीने की बात कही। गांधी ने कहा– ''एक सीमा तक भौतिक उन्नति व आराम आवश्यक है, किंतु एक सीमा के बाद यह सहायता के बजाय अवरोध बन जाता है, इसीलिए असीमित इच्छाओं का सृजन व उनहें पूरा करने की मानसिकता भ्रम और जाल प्रतीत होती है।'' गांधी जी कहते थे कि मानव का अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करना होगा क्योंकि जो व्यक्ति अपनी दैनिक आवश्यकताओं को कई गुना बढ़ाता है वह सादा जीवन, उच्च विचार के लक्ष्य को

कभी नहीं प्राप्त कर सकता है।गांधी जी कहते है कि– ''मुझे प्रकृति के अतिरिक्त किसी प्रेरणा की आवश्यकता नहीं है। उसने कभी भी मुझे विफल नहीं किया है। वह मुझे चकित करती है, भरमाती है, मुझे आनन्द की ओर ले जाती है।''हम विश्व में वनों के प्रति जो कुछ कर रहे है वह केवल उसका प्रतिबिम्ब है जो हम अपने तथा दूसरे के साथ करते है।''13

गांधी जी अहिंसा के पुजारी थे। उनका कहना था कि जीवत व अजीवित पदार्थों के प्रति भी मानव को संवेदनशील होना पड़ेगा। मानव प्रकृति के वरदानों का उपयोग तो कर सकते है किन्तु हमें उन्हें मारने का कोई अधिकार नहीं है। तथा अजीवित पदार्थो का अत्यधिक दोहन भी हिंसा ही है क्योंकि यह जैवमण्डल का हानि पहुँचाता है।गांधी जी ने कहा था कि– ''मैं अद्वैत में विश्वास करता हूँ, मैं मनुष्य की अनिवार्य एकता में विश्वास करता हूँ और उस मामले के लिए सभी जीवों की एकता में।'''पृथ्वी, वायु, भूमि, जल हमारे पूर्वजों से प्राप्त सम्पत्तियाँ नहीं हैं। वे हमारे बच्चों की धरोहरें है। वे जैसी हमें मिली हे वैसे ही उन्हें भावी पीढ़ियों को सौंपना होगा।''

हिन्दुस्तान में अनगिनत पशुधन है जिसकी तरफ हमने ध्यान न देकर गुनाह किया हैं 14 हरिजन 28/04/1946 जो अद्वैत में विश्वास करेगा वही व्यक्ति चर–अचर, पशु–पक्षी, नदी, पर्वत, जीव, अजीव के सह–अस्तित्व में विश्वास करेगा और उनको संरक्षित करने का प्रयास करेगा। गांधी जी मांसाहार के लिए पशु हत्या का विरोध करते है। वे कहते है कि मनुष्य जैसा आहार करता है वैसा बनता है। अतः सात्विक व प्राकृतिक भोजन स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है।15

गांधी जी वृक्ष पूजा को पर्यावरण संरक्षण के लिये आवश्यक मानते है। उनका कहना था कि वृक्ष पूजा में कोई बुराई नहीं है। असहय वृक्ष वनस्पतियां ईश्वर की उस विशालता व महानता की अभिव्यक्ति है। वृक्षों के बिना पृथ्वी पर किसी भी जीव का अस्तित्व संभव नहीं है। इसीलिए वो कहते है कि भारत जैसे देश में जहाँ वृक्षों की कमी है, वृक्ष पूजा का एक गहरा आर्थिक महत्व हो जाता है।

आधुनिक समाज नित नये विकास की अनन्त उचाईयों को छू रहा है। प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की होड़ सी चल रही है किन्तु मनुष्य यह भूल बैठा है कि वह प्रकृति का ही अभिन्न अंग है जिससे अलग उसका कोई वजूद नहीं होगा। मानव जीवन की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए दिन रात उत्पादन में वृद्धि हो रही है जिसके कारण वैश्विक पर्यावरण पर संकट छा रहे है। ओजोन परत का क्षय, बढ़ती उष्मता, अम्लीय वर्षा, समुद्र के जल स्तर में वृद्धि, पीने के पानी की कमी, अशुद्ध वायु, भूमि की उर्वरा शक्ति में कमी आदि कुछ चिन्ताजनक विषय है जो मानव जीवन पर खतरा बन मंडरा रहे हैं।

अतः आज महात्मा गांधी के उन विचारों पर उन मार्गो पर चलने की आवश्यकता है, जिससे मानव अपने भविष्य को सुरक्षित पर्यावरण दे सके। गांधी जी का पर्यावरण के प्रति मैत्रीपूर्ण व्यवहार को जीवन में अपनाने की आवश्यकता है जिससे पर्यावरण को सुरक्षित किया जा सके। गांधी जी की सोच समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के कल्याण की थी। गांधी जी का सम्पूर्ण जीवन मानवता तथा पर्यावरण को समर्पित था। उन्होंने आजीवन प्रकृति की गोद में रहना उचित समझा। उन्होंने व्यक्तिगत जीवन शैली द्वारा समग्र विकास की अवधारणा को विकसित किया। वे हरिजन में लिखते है कि जो व्यकित जीने के लिए खाता है, जो पाँच महाभूतों का यानि मिट्टी, पानी, आकाश, सूरज और हवा का दोस्त बनकर रहता है।16 जो ईश्वर का दास बनकर रहा वह कभी बीमार नहीं पड़ता है। जीवन पर्यन्त वो प्रकृति तथा उसके नियमों से बधे रहे। यही उनकी ताकत व आत्मबल था। उनका विकास सर्वोदय, अहिंसा सत्य व पर्यावरण संरक्षण पर आधारित था। उनके सन्देश भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व के लिए आज भी प्रासंगिक है।

सन्दर्भ सूची :

1. यंग इण्डिया 17–9–1925
2. गांधी की नैतिकता ,संपादक सुजाता, सर्व सेंवा संध प्रकाशन, वाराणसी
3. मंगल प्रभात, पृ0 29, प्रकरण 6
4. हिन्दी नवजीवन, 9–12–19–26
5. यंग इण्डिया 20–9–1928
6. हरिजन 1–9–46
7. वही
8. यंग इण्डिया 26–03–1931
9. हरिजन सेवक 10–5–35
10. मंगल प्रभात, पृ0 41–44, प्रकरण 9
11. यंग इण्डिया 11–4–1929
12. हरिजन 16–05–1936
13. हरिजन 28–04–1946
14. हरिजन 5–8–1933
15. हरिजन 28–4–1946
16. हरिजन 1–9–46

❑